Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

बदर

साप्ताहिक क़ादियान

The Weekly BADAR Qadian HINDI

वर्ष 1

अंक 14

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

9 जून 2016 ई

3 रमज़ान 1437 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

वह बात जिसका नाम तौहीद है और जो नजात की बुनियाद है वह सिवाय इसके कि समय के नबी आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाया जाए और उनकी आज्ञा पालन हो, मिल नहीं सकती और केवल निरी तौहीद सिवाय रसूल की आज्ञाकारिता के कुछ चीज़ नहीं बल्कि मुर्दा की तरह है जिस में रूह नहीं।

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

यह तो हम वर्णन कर चुके कि वह बात जिसका नाम तौहीद है और जो नजात की बुनियाद है और जो शैतानी तौहीद से एक अलग बात है वह सिवाय इसके कि समय के नबी अर्थात आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाया जाए और उनकी आज्ञा पालन हो मिल नहीं सकती और केवल निरी तौहीद सिवाय रसूल की आज्ञाकारिता के कुछ चीज नहीं बल्कि मृत की तरह है जिसमें रूह नहीं। अब यह वर्णन करना रह गया कि क्या कुरआन शरीफ ने हमारे वर्णन के अनुसार इंसान की मुक्ति को रसूल के पालन के साथ जोड़ा है या कुरआन की शिक्षा के विपरीत है। अत: इस तथ्य के समझाने के लिए हम नीचे आयतें प्रस्तुत करते हैं।

(1) قُلۡ اَطِیۡعُوا اللّٰہَ وَ اَطِیۡعُوا الرَّسُوۡلَ (अन्नूर 55)

कह ख़ुदा का पालन करो और रसूल की इताअत करो। और यह प्रमाणिक और स्पष्ट बात है कि ख़ुदा के आदेश की अवहेलना करना गुनाह, और जहन्नम में प्रवेश का कारण है और इस स्थान में जिस तरह ख़ुदा ने अपनी आज्ञाकारिता के लिए आदेश दिया है। ऐसा ही रसूल की इताअत के लिए आदेश दिया है। इसलिए जो भी इस आदेश से दूर है वह ऐसे अपराध करता है जिसकी सज़ा जहन्नम है।

(2) یٰۤاَیُّهَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تُقَدِّمُوۡا بَیۡنَ یَدَیِ اللّٰہِ وَ رَسُوۡلِہٖ وَ اتَّقُوا اللّٰہَ ؕ اِنَّ اللّٰہَ سَمِیۡعٌ عَلِیۡمٌ

(2 सूर अलहुजरात 2)

(अनुवाद) ऐ ईमान वालो ख़ुदा और रसूल की आज्ञा से बढ़कर कोई बात न करो अर्थात ठीक-ठीक ख़ुदा और रसूल के आदेशों पर चलो और अवज्ञा में ख़ुदा से डरो। ख़ुदा सुनता भी है और जानता भी है। अब ज़ाहिर है कि जो व्यक्ति केवल अपने निरे एकेश्वरवाद पर भरोसा करके (जो वास्तव में वह एकेश्वरवाद भी नहीं) रसूल से अपने लिए आवश्यक नहीं समझता है और रसूल से सम्बन्ध विच्छेद करता है और पूरी तरह से अपने आप को अलग कर देता है और दिलेर कदम आगे रखता है। वह ख़ुदा का अवज्ञा करने वाला है और नजात से बे नसीब।

(3) مَنۡ کَانَ عَدُوًّا لِّلّٰہِ وَ مَلٰٓئِکَتِہٖ وَ رُسُلِہٖ وَ جِبۡرِیۡلَ وَ مِیۡکٰلَ فَاِنَّ اللّٰہَ عَدُوٌّ لِّلۡکٰفِرِیۡنَ (सूर: अल्बक़रा 98)

अत: जो भी अल्लाह का और उसके फ़रिश्तों का और उसके रसूलों का और जिब्रील का और मीकाईल का शत्रु हो तो नि:सन्देह अल्लाह काफ़िरों का शत्रु है। अब स्पष्ट है कि जो व्यक्ति केवल शुष्क तौहीद को स्वीकार करता है मगर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का विरोद्धी है वह वास्तव में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का दुश्मन है इसलिए इस आयत की इच्छा के अनुसार ख़ुदा उसका दुश्मन है और वह ख़ुदा के पास काफ़िर है तो उसकी नजात कैसे हो सकती है।

(4) یٰۤاَیُّهَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡۤا اٰمِنُوۡا بِاللّٰہِ وَ رَسُوۡلِہٖ وَ الۡکِتٰبِ الَّذِیۡ نَزَّلَ عَلٰی رَسُوۡلِہٖ وَ الۡکِتٰبِ الَّذِیۡۤ اَنۡزَلَ مِنۡ قَبۡلُ ؕ وَ مَنۡ یَّکۡفُرۡ بِاللّٰہِ وَ مَلٰٓئِکَتِہٖ وَ کُتُبِہٖ وَ رُسُلِہٖ وَ الۡیَوۡمِ الۡاٰخِرِ فَقَدۡ ضَلَّ ضَلٰلًۢا بَعِیۡدًا

(सूर: अन्निसा 137)

(अनुवाद)हे लोगो जो ईमान लाए हो ! अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान ले आओ और उस पुस्तक पर भी जो उसने अपने रसूल पर उतारी है और उस पुस्तक पर भी जो उसने पहले उतारी थी। और जो अल्लाह का इनकार करे और उसके फ़रिश्तों का और उसकी पुस्तकों का और उसके रसूलों का और अंतिम दिवस का, तो निस्सन्देह वह बहुत ही घोर पथभ्रष्टता में (पड़कर) भटक चुका है ।

(5) وَ مَا کَانَ لِمُؤۡمِنٍ وَّ لَا مُؤۡمِنَۃٍ اِذَا قَضَی اللّٰہُ وَ رَسُوۡلُہٗۤ اَمۡرًا اَنۡ یَّکُوۡنَ لَہُمُ الۡخِیَرَۃُ مِنۡ اَمۡرِہِمۡ ؕ وَ مَنۡ یَّعۡصِ اللّٰہَ وَ رَسُوۡلَہٗ فَقَدۡ ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِیۡنًا (सूर अहज़ाब 38)

(अनुवाद) एक मोमिन को जायज़ नहीं है कि जब ख़ुदा और उसका रसूल कोई आज्ञा दे तो उन्हें इस आदेश के अस्वीकार करने में अधिकार हो। और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की अवज्ञा करे वह सच से बहुत दूर जा पड़ा है अर्थात नजात से वंचित रहा।

(6) وَ مَنۡ یَّعۡصِ اللّٰہَ وَ رَسُوۡلَہٗ وَ یَتَعَدَّ حُدُوۡدَہٗ یُدۡخِلۡہُ نَارًا خَالِدًا فِیۡہَا ۪ وَ لَہٗ عَذَابٌ مُّہِیۡنٌ (सूरअन्निसा 14)

(अनुवाद) जो व्यक्ति ख़ुदा और रसूल की अवज्ञा करे और उसकी सीमाओं से बाहर हो ख़ुदा उसे जहन्नम में प्रवेश करेगा और वह जहन्नम में हमेशा रहेगा और उस पर अपमानित करने वाला अज़ाब नाज़िल होगा।

अब देखो कि रसूल से संबन्ध विच्छेद में इससे बढ़कर और क्या चेतावनी होगी कि प्रतापी ख़ुदा फरमाता है कि जो कोई रसूल की अवज्ञा करे इसके लिए चिरस्थायी जहन्नम का वादा है। मगर मियाँ अब्दुल हकीम कहते हैं कि जो व्यक्ति नबी का इंकार करने वाला और अवज्ञा करने वाला हो, यदि वह एकेश्वरवाद पर स्थापित हो तो वह निस्संदेह जन्नत में जाएगा। मुझे पता नहीं कि उनके पेट में किस प्रकार की तौहीद है कि बावजूद नबी के विरोध और अवज्ञा जो तौहीद का स्रोत है, जन्नत तक पहुंचा सकती है। लअनतुल्लाह अलल् काज़ेबीन।

(7) وَ مَاۤ اَرۡسَلۡنَا مِنۡ رَّسُوۡلٍ اِلَّا لِیُطَاعَ بِاِذۡنِ اللّٰہِ (सूर निसा)

अर्थात हर एक नबी हम ने इसलिए भेजा है कि ताकि ख़ुदा के आदेश से उसकी बात मानी जाए। अब स्पष्ट है कि जबकि इस आयत के अनुसार नबी की इताअत फर्ज़ है। इसलिए जो नबी की आज्ञाकारिता से बाहर हो वह कैसे बचाया जा सकता है।

(8) قُلۡ اِنۡ کُنۡتُمۡ تُحِبُّوۡنَ اللّٰہَ فَاتَّبِعُوۡنِیۡ یُحۡبِبۡکُمُ اللّٰہُ وَ یَغۡفِرۡ لَکُمۡ ذُنُوۡبَکُمۡ ؕ وَ اللّٰہُ غَفُوۡرٌ رَّحِیۡمٌ (आले इम्रान 31)

(अनुवाद) उनको कह कि अगर ख़ुदा से तुम प्यार करते हो। तो आओ मेरा अनुकरण करो ताकि ख़ुदा भी तुमसे प्यार करे और तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर दे और ख़ुदा क्षमा करने वाला दयालु है। उन्हें कह कि ख़ुदा और रसूल का पालन करो तो अगर वह आज्ञाकारिता से मुंह फेर लें तो ख़ुदा काफिरों को दोस्त नहीं रखता। इन आयतों से साफ तौर पर स्पष्ट होता है कि गुनाहों की क्षमा और ख़ुदा तआला का प्रेम आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर विश्वास से जुड़ा है। और जो लोग ईमान नहीं लाते वे काफिर हैं।

(हकीकतुल वह्यी, रूहानी खज़ायन,भाग 22, पृष्ठ 127 -130)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

अहमदिया मुस्लिम जमाअत यू.के के तेरहवें वार्षिक शान्ति सम्मेलन में अमीरुल मोमिनीन हज़रत ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह बिनसरेहिल अज़ीज़ का सम्मिलित होना।

(इस्लाम की सुंदर और अभूतपूर्व शिक्षा के अनुसार दुनिया में शांति के विषय में ईमान वर्धक ख़िताब) (भाग-1)

ख़िताब हज़रत अमीरुल मोमिनीन हज़रत ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह बिनसरेहिल अज़ीज़

जमाअत अहमदिया ब्रिटेन के बैनर के नीचे 19 मार्च 2016 की शाम मस्जिद बैतुल फुतूह में तेरहवें वार्षिक शांति सम्मेलन का आयोजन किया गया था। इस समारोह में राज्य के सैक्रेट्री , सांसद, मंत्री, तीस से अधिक देशों के राजदूत, पत्रकार, विभिन्न क्षेत्रों के शिक्षा विशेषज्ञों और विचारक, सरकारी पदाधिकारी, मेयर और विभिन्न धर्मों, चीरेटीज़ और अन्य जीवन के विभागों से संबंधित अहमदी, ग़ैर अहमदी और गैर मुस्लिम गणमान्य व्यक्ति और सज्जनों ने भाग लिया। मस्जिद पधारने वाले मेहमान आगमन पर पंजीकरण के बाद सम्मेलन हॉल में तशरीफ़ लाते इस अवसर पर कुछ मेहमानों को मस्जिद बैतुल फुतूह के विभिन्न भागों का परिचय भी करवाया गया।

कार्यक्रम के अंत में हुज़ूर अनवर स्टेज पर आए और इस अवसर पर अपने अध्यक्षीय संबोधन को बिस्मिल्लाह हिर रहमान निर्ररहीम और अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ शुरू किया।

हुज़ूर अनवर ने दर्शकों को अस्सलामों अलैकुम वरहमतुल्लाह का उपहार प्रदान किया दिल की गहराई से सभी मेहमानों के पधारने पर धन्यवाद कहा। हुज़ूर ने फरमाया कि मौजूदा हालात में आप का यहां आकर इस सम्मेलन में शामिल हो विशेष रूप से उल्लेखनीय है क्योंकि आजकल विभिन्न आतंकवादी समूह इस्लाम के नाम पर बेहद दर्दनाक काम करके इस्लाम के सुंदर नाम को बदनाम कर रहे हैं। हज़ूर अनवर ने नवंबर 2015 में होने वाले पेरिस हमले और अन्य देशों में होने वाले आतंकवाद की घटनाओं का उल्लेख कर फरमाया कि ब्रिटेन में पुलिस के सहायक आयुक्त ने हाल ही में एक बयान में कहा है कि आई एस यहाँ ब्रिटेन में भी हमले करने की योजना बना रही थी जिसमें महत्त्वपूर्ण केन्द्रों और सार्वजनिक स्थानों को निशाना बनाने की साजिश थी।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि पिछले साल के दौरान यूरोप में अचानक बड़ी संख्या में प्रवासियों का आगमन हुआ है जिससे यहां के कई निवासी भय आतंक, दुविधा में हैं और डर की भावनाओं को महसूस कर रहे हैं। ऐसे हालात में आप लोगों को जो मुसलमान नहीं मुसलमानों द्वारा आयोजित किए जाने वाले इस समारोह में शामिल होना इस बात को प्रमाणित करता है कि आप बहादुर, सहिष्णु और खुले दिल वाले लोग हैं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि यह एक स्पष्ट तथ्य है कि इस्लाम की सच्ची शिक्षाओं से किसी को डरने की ज़रूरत नहीं। कुछ लोग इस्लाम को एक चरमपंथी धर्म समझते हैं और मानते हैं कि इस्लाम आत्मघाती हमलों या आतंकवाद की अनुमति देता है। लेकिन वास्तव में इसमें कोई सच्चाई नहीं है। हाल ही में एक शानदार स्तंभकार ने एक अखबार में इसलामोफूबिया (इस्लाम से भय) की बढ़ती प्रवृत्ति पर एक लेख लिखा है। इसमें उन्होंने लिखा है कि आत्मघाती हमलों में एक बहुत लंबे अनुसंधान के बाद उन्हें पता चला कि पहला आत्मघाती हमला 1980 के दशक में हुआ। जबकि इस्लाम को आए तेरह सौ वर्ष बीत चुके थे। उन्होंने निष्कर्ष निकाला है कि इस्लाम में अगर आत्मघाती हमले वैध होते तो यह कार्य तेरह सौ साल पहले ही शुरू हो जाते और इस्लामी इतिहास में हमें ज़रूर ऐसी घटनाएं देखने में आतीं। हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि उनकी यह दलील बहुत उचित है और बहुत उचित शैली में प्रस्तुत की गई है। और इससे यह साबित होता है कि यह आत्मघाती हमला इस ज़माने में आविष्कार की जाने वाली एक बुराई है और उनका इस्लाम की सच्ची और शांति की शिक्षा से दूर का भी संबंध नहीं है। इस्लाम सभी प्रकार की आत्महत्या से स्पष्ट रूप से मना करता है। इसलिए किसी भी आत्मघाती हमले या आतंकवाद की अनुमति नहीं दे सकता। इस प्रकार के हमलों के परिणाम में बिना भेदभाव के मासूम महिलाओं, बच्चों और निहत्थे लोगों को क्रूर तरीके से मौत के घाट उतार दिया जाता है।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि वर्तमान में राइस विश्वविद्यालय ह्यूस्टन टेक्सास (Rice University Houston Texas) के प्रोफेसर डॉक्टर कौंसडाईन (Dr. Craig Considine) ने अपने एक शोध में यह साबित किया है कि तथाकथित इस्लामिक स्टेट (आई.एस) द्वारा ईसाइयों पर किए जाने वाले अत्याचारों का औचित्य नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उपदेशों और आदेशों से किसी रूप में भी प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसमें उन्होंने यह भी लिखा है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो इस्लामी समाज की कल्पना की थी उसका आधार सभी धर्मों के बीच सहिष्णुता और नागरिकों के अधिकारों के संरक्षण पर रखा गया था। इसलिए यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि चरम पंथियों की कार्रवाई इस्लामी सिद्धांत के सरासर ख़िलाफ हैं। इस्लाम ने अगर कभी युद्ध की अनुमति भी दी है तो अपने बचाव के लिए दी है, ऐसी स्थिति में जबकि आप पर युद्ध थोपा जा रहा हो । जैसे कुरआन की सूरत अलहज की आयत 40 में अल्लाह तआला फरमाता है कि वे लोग जिनसे (अकारण) लड़ाई की जा रही है उन्हें भी (युद्ध की) अनुमति दी जाती है। और इसी आयत में अल्लाह तआला फरमाता है कि धर्म के लिए लड़ी जाने वाली जंगों में अल्लाह उनकी मदद करेगा जो पीड़ित होंगे।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया, जैसा इस्लाम के आरम्भ में जो युद्ध लड़े गए वे शुद्ध धार्मिक युद्ध थे कि धर्म की स्वतंत्रता को स्थापित करने के लिए लड़े गए। इसलिए तारीख से यह साबित होता है कि इस इरादे से लड़े जाने वाले युद्धों में जहां दुश्मन पूरी तरह से सशस्त्र और मुसलमानों से संख्या में कई गुना अधिक संख्या में होता था अल्लाह तआला ने मुसलमानों को संख्या कम होने और पूरे तरह से सशस्त्र न होने के बावजूद जीत से सम्मानित किया।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि एक मुसलमान के अगर मैं आज के दौर में लड़े जाने वाले मुस्लिम युद्ध का विश्लेषण करूं तो मैं यह विश्वास से कह सकता हूँ कि यह युद्ध धार्मिक युद्ध नहीं। इस के कई कारणों में से एक कारण यह है कि उनमें से अधिकतर युद्ध या तो मुसलमानों के आंतरिक हंगामों के कारण से हुए या पड़ोसी मुस्लिम देशों से लड़े गए। और जो युद्ध ग़ैर मुस्लिम देशों से भी हुए उन्हें धार्मिक युद्ध घोषित नहीं किया गया। और दोनों पक्षों में मुस्लिम सैनिक लड़ते रहे। यह बात स्पष्ट है कि आज के दौर के युद्ध इस्लामी धार्मिक युद्ध नहीं हैं बल्कि यह युद्ध आर्थिक या राजनीतिक लाभ प्राप्त करने के इरादे से लड़े जा रहे हैं। और इस्लाम की बदनामी का कारण बन रहे हैं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि जो कुछ अब तक मैंने कहा है इस से आप पर यह स्पष्ट हो गया होगा कि सच्चे और वास्तविक इस्लाम से किसी प्रकार का भय करने की ज़रूरत नहीं, इस्लाम आतंकवाद, आत्मघाती हमलों और अंधाधुंध जन साधारण की हत्या की बिल्कुल अनुमति नहीं देता है। इसलामोफूबिया का कोई औचित्य नहीं बनता क्योंकि इस्लाम की वास्तविक शिक्षाएं शांति की स्थापना, धीरज और एक दूसरे का सम्मान करने की प्रेरणा देने के अतिरिक्त और कुछ नहीं। इस्लामी शिक्षाएं मानवीय मूल्यों को स्थापित करती हैं और सभी मनुष्यों का सम्मान, गरिमा और स्वतंत्रता की वाहक हैं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि इन सभी बातों के बावजूद हम सब यह भी जानते हैं कि कुछ उग्रता पसन्द और ज़ालिम लोग इसी सुंदर इस्लाम के नाम पर बहुत क्रूर कार्रवाई भी कर रहे हैं। वैसे भी जो आयत मैंने आप के सामने प्रस्तुत की है इस बात को अच्छी तरह साफ कर देती है कि चाहे कैसे ही हालात का सामना करना पड़ रहा हो इस्लाम ऐसी हरकतों की किसी हालत में भी अनुमति नहीं है।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि एक और बात जो मुझे मुसलमान होने के नाते युद्ध की ओर आकर्षित होने के स्थान पर सभी इंसानों से प्यार करने पर मजबूर करती है वह यह है कि कुरआन के बिल्कुल शुरू में, दूसरी ही आयत में अल्लाह तआला अपने आप को "रब्बुल आलमीन" फरमाता है। और तीसरी आयत में फरमाता है कि वह "बेहद उपकार करने वाला, बार बार रहम करने वाला" है। तो अगर अल्लाह अपने आप को सभी इंसानों का रब कहता है और बेहद उपकार करने वाला, बार बार दयालु कहता है तो यह कैसे संभव था कि वह उन लोगों को जो उस पर ईमान लाए हैं कहे कि वह उसकी सृष्टि की क्रूर रूप में हत्या करें और उन्हें किसी भी तरह की पीड़ा में डालें ? अवश्य इस सवाल का जवाब यही होगा कि ऐसा आदेश अल्लाह तआला की तरफ से नहीं हो सकता।

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

अगर आप के घरों की आबादियां बढ़ी हैं अगर आप के धन बढ़े हैं जमाअत का प्रदर्शन इमारतों के मामले में अल्लाह तआला ने विस्तार दे दिया है तो निश्चित रूप से इन बातों पर हमें अल्लाह तआला का आभारी होना चाहिए।

अल्लाह तआला ने आप को या आप के पूर्वजों को अहमदियत स्वीकार करने की शक्ति दी है तो यह अल्लाह तआला की विशेष कृपा है और अल्लाह तआला ने किसी नेकी के कारण यह फज़्ल (अनुग्रह) किया है लेकिन अल्लाह तआला के फज़्लों को जारी रखने के लिए इन नेकियों में बढ़ना और अपनी हालतों को पहले से बेहतर करना भी ज़रूरी है।

हर वर्ग और हर प्रकार के लोगों को जो अहमदियत में शामिल हुए, चाहे जन्मजात हैं चाहे बाद में बैअत करने वाले हैं चाहे हिजरत कर के आने वाले हैं या यहां के रहने वाले हैं उन सभी को इन बातों पर विचार करना होगा कि अब उन्हें इस्लाम की वास्तविक शिक्षा पर अनुकरण करने की कोशिश करनी चाहिए ताकि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम की बैअत में आने का हक़ अदा कर सकें।

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विभिन्न उपदेशों के हवाले से नेकी और तक्वा पर क़ायम होने,लोगों से उपकार का व्यवहार करने, चरित्र में बेहतरी पैदा करने और ईमान की तरक्की के लिए लग़्व बातों से बचने के इत्यादि बातों के बारे में प्रमुख उपदेश।

जो लोग कहते हैं कि हम ने बहुत दुआएँ कीं बहुत लम्बी लम्बी दुआएँ कीं बड़ी दुआएं कीं और स्वीकार नहीं हुईं अपने दिलों को टटोलें समीक्षा करें कि कहीं कोई छुपा शिर्क तो नहीं किसी प्रकार की बिदअत में तो शामिल नहीं या और ऐसी बातें तो नहीं हो रहीं जिससे अल्लाह तआला ने मना फरमाया है।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़,

दिनांक 6 मई 2016 ई. स्थान - मस्जिद नुसरत जहां,डेनमार्क,

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

लगभग ग्यारह साल पहले मैं यहां आया था। समय गुज़रने का पता नहीं चलता। कई बच्चे थे। आज जवान हो गए होंगे। कई ऐसे होंगे जो बच्चों के माता-पिता बन चुके होंगे। ज़ाहरी तौर पर भी अल्लाह तआला ने यहाँ जमाअत में बहुत फज़्ल फरमाया है और मस्जिद के साथ एक बड़ा हॉल, कार्यालय, पुस्तकालय और दूसरी सुविधाएं मिल गईं। इसी तरह मस्जिद के सामने जो मकान लिया था उस में भी बड़ा विस्तार पैदा हुआ और मिशनरी का निवास, गेस्ट हाउस और एक बड़ा हॉल उपलब्ध हो गया। यह सब अल्लाह तआला के फज़्ल हैं। अगर आप के घरों की आबादियां बढ़ी हैं अगर आप के धन बढ़े हैं जमाअत का इमारतों के मामले में प्रदर्शन को अल्लाह तआला ने विस्तार दे दिया है तो निश्चित रूप से इन बातों पर हमें अल्लाह तआला का आभारी होना चाहिए। उस का धन्यवाद कैसे हो और इसका क्या निहित है।? हम जो इस ज़माने के इमाम को मानने वाले हैं जो इस बात पर विश्वास करते हैं कि हम ने उस व्यक्ति को माना है, जिस के बारे में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि अगर ईमान सुरैया पर भी चला गया तो वह उसे वापस लाएगा तो हमें अपनी सोचें भी मोमिनाना बनानी होंगी। हमें ज़ाहरी धन्यवाद या केवल मुंह से अल्हम्दो लिल्लाह कहकर ख़ुश नहीं हो जाना चाहिए बल्कि यह देखना होगा कि क्या हम अल्लाह तआला के बताए हुए आदेश का पालन कर रहे हैं ? क्या हम इस तरह रह रहे हैं जो एक मोमिन का जीवन है और जिस का विवरण अल्लाह तआला और उसके रसूल ने वर्णन किया है और जिसे इस युग में खोलकर हमारे सामने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने पेश फरमाया।

मैंने उस समय भी यहां के अहमदियों को इस ओर ध्यान दिलाया था, जब मैं यहाँ ग्यारह साल पहले आया था जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया और अक्सर यह ध्यान दिलाता रहता हूँ और अल्लाह तआला ने जो हमें एम.टी.ए की सुविधा और नेअमत प्रदान की है उसके द्वारा मेरी बातें प्रत्येक अहमदी तक पहुंच रही हैं बशर्ते वह उन्हें सुनना चाहे। बहरहाल मैंने कहा था कि अल्लाह तआला ने आप को या आप के पूर्वजों को अहमदियत स्वीकार करने की ताकत दी है तो यह अल्लाह तआला की विशेष कृपा है और अल्लाह तआला ने किसी नेकी के कारण यह फज़्ल (अनुग्रह) किया है लेकिन अल्लाह तआला के फज़्लों को जारी रखने के लिए इन नेकियों में बढ़ना और अपनी हालतों को पहले से बेहतर करना भी ज़रूरी है वरना हमें याद रखना चाहिए कि अगर हमारे कदम रुक गए या धार्मिक बातों में बेध्यानी पैदा हो गई या होती रही तो हम अपनी नस्लों को भी धर्म से दूर करने वाले होंगे और इस प्रकार उन्हें अल्लाह तआला के इस विशेष कृपा से जिस की भविष्यवाणी आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाई थी वंचित करने वाले होंगे अर्थात मसीह मौऊद की प्रादुर्भाव और उसका मानना। जिनके बाप दादा अहमदी हुए अगर उनकी नस्लें धर्म से दूर हट गईं तो वे अपने बड़ों की अपनी बुज़ुर्गों की दुआओं से वंचित रहेंगी। अल्लाह तआला नेकी का इनाम देता है और निश्चित रूप से देता है। अगर किसी की नेकी हो और शुद्ध रूप से अल्लाह तआला की ख़ुशी के लिए हो तो संतानें भी लाभ पाती हैं लेकिन साथ ही अल्लाह यह भी फरमाता है कि तुम्हें अपने व्यवहार सही करने होंगे ताकि अल्लाह तआला के फज़्लों का फ़ैज़ हमेशा जारी है। जिनके बुज़ुर्ग अहमदी हुए उन पूर्वजों ने तो अपनी बैअत के वादा को निभाया और दुनिया से विदा हुए। इस इच्छा और दुआ के साथ विदा हुए कि उनकी सन्तान भी यह वादा निभाने वाली हों तो इस समय आप में से कई ऐसे हैं जिन्हें यह सोचने की ज़रूरत है कि क्या हम इस वादा को निभाने वाले हैं जो हिदायत हमारे बुज़ुर्गों ने हमें की थी या जिस रास्ते पर हमारे बुज़ुर्ग हमें डालना चाहते थे इस की समीक्षा लेने की ज़रूरत है कि क्या वास्तव में हम अपना बैअत का वादा निभा रहे हैं या केवल अपने बुज़ुर्गों के पारंपरिक धर्म पर कायम हैं। केवल रिश्तादारी और सामाजिक संबंधों के कारण से जमाअत में शामिल हैं अब यहाँ बैठे हुए हैं।

इसी तरह जिन्होंने ख़ुद अहमदियत स्वीकार की है वह यह समीक्षा करें कि हम ने ईमान में बढ़ने और अपने कर्मों को बेहतर बनाने की कोशिश की है या कर रहे हैं या वे एक क्षणिक जुनून था जो अहमदियत स्वीकार कर ली। किसी बात से प्रभावित होकर अहमदियत स्वीकार कर ली और अब तक वहीं खड़े हैं जहां पहले दिन थे। लाभ तो हमें तभी होगा जब हमारा कदम बल्कि हर कदम तरक्की की ओर बढ़ रहा होगा जो विकसित देशों में हिजरत करके आए हैं इन देशों में उन्हें लगातार यह देखने की ज़रूरत है कि कहीं बेहतर स्थिति ने उन्हें धर्म से दूर तो नहीं कर दिया। यूरोप की तरक्की से प्रभावित होकर धर्म को भूल तो नहीं गए? अल्लाह तआला की कृपा से यहाँ कोसोवो से पूर्वी यूरोप से आए हुए भी कई लोग हैं जिन्होंने अहमदियत स्वीकार की है आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम को माना है उन्हें भी याद रखना चाहिए कि उन पर अल्लाह तआला ने बड़ा फज़्ल किया है।

अत: यहां विभिन्न प्रकार के लोग हैं। हर वर्ग और हर प्रकार के लोगों को जो

अहमदियत में शामिल हुए, चाहे जन्मजात हैं, चाहे बाद में बैअत करने वाले हैं चाहे हिजरत कर के आने वाले हैं या यहां के रहने वाले हैं। उन सभी को इन बातों पर विचार करना होगा कि अब उन्हें इस्लाम की वास्तविक शिक्षा पर अनुकरण करने की कोशिश करनी चाहिए ताकि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम की बैअत में आने का हक़ अदा कर सकें।

इसलिए जैसा कि मैंने पहले कहा जन्मजात अहमदी हों, पुराने अहमदी हों या नए अहमदी हों प्रत्येक अहमदी महिला और पुरुष को इस बात की समीक्षा करने की ज़रूरत है कि क्या वे बैअत का हक़ अदा कर रहे हैं? या सही अदा करने की कोशिश कर रहे हैं क्या हम पर जो जिम्मेदारियां हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने डाली हैं उन्हें अदा करने की कोशिश कर रहे हैं? क्या अपनी हालतों को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की शिक्षा के अनुसार ढालने की कोशिश कर रहे हैं? क्या हम अपने बच्चों की इस रंग में प्रशिक्षित करने की कोशिश कर रहे हैं कि उन्हें धर्म को दुनिया में प्राथमिकता देने की चेतना शुरू से ही पैदा हो जाए।? क्या हमारे अपने कर्म इस्लामी शिक्षा के अनुसार बच्चों के लिए नमूना हैं? क्या हमारी नमाज़ें, हमारे इबादतें और हमारा हर कर्म अल्लाह तआला और उसके रसूल की बताई हुई शिक्षा के अनुसार हैं ? ये बातें प्रत्येक अपनी समीक्षा लेकर ख़ुद बेहतर जान सकता है। इन बातों की गहराई जानने और अपनी समीक्षा की बेहतर गुणवत्ता निर्धारित करने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमारा मार्गदर्शन किया हुआ है।

इस समय में उनमें से कुछ बातें प्रस्तुत करूँगा जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हम से चाहते हैं।

एक मज्लिस मैं अपनी जमाअत को नसीहत करते हुए बड़े दर्द से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि

"हमारी जमाअत को चाहिए कि अशान्त ज़माने में जब हर तरफ पथ भ्रष्टता, लापरवाही और अज्ञानता की हवा चल रही है तक्वा धारण करे। दुनिया का यह अवस्था है कि अल्लाह तआला के आदेशों का सम्मान नहीं है। हक और वसीयतों की परवाह नहीं है।"(न अपने ज़िम्मे हक़ अदा करते हैं, न जो वसीयतें हैं उन्हें पूरा करने वाले हैं।) "दुनिया और उसके कार्यों में अत्यधिक लीन है। ज़रा सा नुकसान दुनिया का होता देखकर धर्म के हिस्से को छोड़ देते हैं।"(इस समय धर्म को प्राथमिकता देने के स्थान पर दुनिया को प्राथमिकता देते हैं। दुनिया को नुकसान से बचाने की कोशिश करते हैं चाहे धर्म बेशक चला जाए।) आप फरमाते हैं "थोड़ा सा नुकसान दुनिया का होता देखकर धर्म के हिस्से को छोड़ देते हैं और अल्लाह तआला के हक खो देते हैं, जैसे कि यह सब बातें मुकदमा बाज़ियों में और भागीदारों के साथ वितरण में भाग में देखी जाती हैं।" रिश्तादारों में आपस में संपत्तियों का विभाजन हो रहा हो या समस्याएं पैदा हो रहे हैं वहां देखी जाती हैं। ये बातें और आज भी यह दैनिक की बातें हैं। फिर फरमाया कि "लालच के इरादे से एक दूसरे से पेश आते हैं। नफसानी भावनाओं के मुकाबला में भी कमज़ोर स्थिति है। इस समय तक कि ख़ुदा ने उन्हें कमज़ोर कर रखा है गुनाह का साहस नहीं करते। मगर जब ज़रा कमज़ोरी दूर हुई और गुनाह का मौका मिला तो झट उसके दोषी होते हैं।" अगर गुनाहों से बचे हुए हैं इसलिए नहीं कि अच्छाई अधिक है इस लिए साहस नहीं है कुछ बातों का डर है मगर जब वे डर दूर हो जाता है तो फिर गुनाह करने लग जाते हैं। फरमाया "आज इस युग में हर जगह देख लो तो यही पता मिलेगा कि मानो सच्चा तक्वा उठ गया हुआ है और सच्चा ईमान बिल्कुल नहीं रहा है लेकिन चूंकि ख़ुदा तआला को स्वीकार है कि उनके सच्चा तक्वा और ईमान के बीज को कभी बर्बाद न करे।" जिन लोगों में सच्चा तक्वा और ईमान का बीज है उसे बर्बाद न करे। फरमाया कि "जब (अल्लाह तआला)देखता है कि अब फसल पूरी तरह नष्ट होने पर आती है तो और फसल पैदा कर देता है। वही नित नया कुरआन मौजूद है जैसा कि ख़ुद ातआला ने फरमाया था कि اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّکۡرَ وَ اِنَّا لَہٗ لَحٰفِظُوۡنَ (अल्हिजर 10) बहुत सा हिस्सा हदीसों का मौजूद है और बरकतें भी हैं मगर दिलों में ईमान और व्यावहारिक स्थिति बिल्कुल नहीं है।" उस समय भी यह नक्शा मुसलमानों का खींचा गया और आज भी यही स्थिति है। आप फरमाते हैं कि "ख़ुदा तआला ने मुझे इसलिए भेजा है कि ये बातें फिर पैदा हों। ख़ुदा ने जब देखा कि मैदान खाली है तो उसकी अलूहियत (उपास्य होने) की आवश्यकता ने हरगिज़ पसंद नहीं किया कि यह क्षेत्र खाली रहे।" अल्लाह तआला ने जब देखा कि मैदान ख़ाली हो रहा है लोगों के दिल नेकी और तक्वा से खाली हो रहे हैं तो अल्लाह तआला ने मानवीय सहानुभूति के रूप में सामने रखते हुए यह पसंद न किया कि यह क्षेत्र खाली रहे और फरमाया कि "लोग ऐसे ही दूर हैं। इसलिए अब उन लोगों के मुकाबला में ख़ुदा तआला एक नई क़ौम जिन्दों की पैदा करना चाहता है और इसीलिए हमारी तब्लीग़ है कि तक्वा का जीवन प्राप्त हो जाए।"

(मल्फूज़ात भाग 4 पृष्ठ 395-396 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

तो जैसा कि मैं ने पहले कहा था कि अगर हम समीक्षा करें तो यह सिर्फ उस समय के लोगों का नक्शा नहीं है जब आप अलैहिस्सलाम अपने ज़माने के लोगों को नसीहत फरमा रहे थे बल्कि आज भी हमें यही बातें दिखती हैं।

हम में से कितने हैं जो अल्लाह तआला की आज्ञाओं को अपने ऊपर लागू करने वाले हैं। दूसरों को तो छोड़ें हम जो आपकी बैअत में शामिल होने का दावा करते हैं हम में से कितने हैं? यह समीक्षा करने की ज़रूरत है। अल्लाह तआला फरमाता है कि मैंने जिन और मानव जाति को इबादत के लिए बनाया है। क्या हम अपने सांसारिक कार्यों को अपनी इबादत पर कुर्बान करते हैं या इस के विपरीत है या हमारी इबादतें हमारे सांसारिक कार्यों पर कुर्बान हो रही हैं।? ऐसे भी हैं अगर समय पर नमाज़ पढ़ भी लें तो गले से उतारने की कोशिश करते हैं। इन लोगों का हाल तो अलग जिन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को नहीं माना हम में से भी ऐसे हैं।

अल्लाह तआला फरमाता है कि लोगों मामलों में दया का व्यवहार करो लेकिन कई ऐसे हैं जो दया का व्यवहार तो एक तरफ रहा दूसरे के अधिकार मारने की कोशिश करते हैं तो ऐसे भी हैं जो दुनिया का नुकसान तो बर्दाश्त नहीं लेकिन धर्म का नुकसान हो रहा हो तो सहन कर लेते हैं। कितने ही हम में से ऐसे हैं जिन्हें भावनाओं पर नियंत्रण नहीं है। ज़रा-जरा सी बात पर भड़क जाते हैं। अगर ग़ैर ये करें तो हम कह सकते हैं कि ये अज्ञानी हैं। लेकिन यदि हम में से कोई ऐसा करे तो बहरहाल यह अफसोस योग्य बात है। इसलिए हर कोई ख़ुद इन बातों में अपनी समीक्षा कर सकता है और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ये शब्द हमें हमेशा सामने रखने चाहिए कि अल्लाह तआला एक नई क़ौम ज़िन्दों की पैदा करना चाहता है अत: हम ने उन ज़िन्दों में शामिल होने के लिए बैअत की है इसलिए उसका हक़ अदा करने के लिए आप की बातों पर हमें ध्यान देना होगा ताकि ज़िन्दा क़ौम में शामिल हो सकें।

फिर इस बात की ओर ध्यान दिलाते हुए कि हिदायत मुजाहिदा (चेष्ठा) और तक्वा पर आधारित है जब तक तक्वा पैदा न हो जब तक मनुष्य कोशिश न करे जब तक अपने आप को कष्ट में डाल कर धर्म के लिए हर कुर्बानी के लिए तैयार न हो तब तक वास्तविक हिदायत नहीं पा सकता। इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं

"जो व्यक्ति केवल अल्लाह तआला से डर कर उस के रास्ते की खोज में कोशिश करता है और इस बात के खुलने के लिए दुआ करता है तो अल्लाह तआला अपने कानून وَ الَّذِیۡنَ جَاهَدُوۡا فِیۡنَا لَنَهۡدِیَنَّهُمۡ سُبُلَنَا (अल्अन्कबूत :70) अर्थात जो लोग हम में से होकर कोशिश करते हैं। हम अपनी राहें उन्हें दिखाते हैं, के अनुसार ख़ुद हाथ पकड़ कर राह दिखा देता है।" अल्लाह तआला की राह खोजने के लिए यह कोशिश उनकी होती है और फिर दुआएं भी होती हैं कि उनकी बुराइयां दूर हों। अल्लाह तआला उनसे मिले और उसके लिए जैसा कि कुरान शरीफ में अल्लाह तआला ने फरमाया है यह आयत जो मैंने पढ़ी कि अगर अल्लाह तआला की राह में कोशिश करोगे तो अल्लाह तआला तो फिर अल्लाह तआला अपने मार्ग दिखाता है। आप फरमाते हैं इस आयत "के अनुसार ख़ुद हाथ पकड़ कर राह दिखा देता है और उसे दिल का संतोष प्रदान करता है और अगर ख़ुद दिल अन्धकार का स्थान हो और दुआ ज़बान से बोझिल हो और विश्वास व शिर्क और बिदअत से सम्मिलित हो तो वह दुआ ही क्या है" कि अगर दिल ख़ुद ही अंधेरे और अन्धकार में डूबा हुआ है, ज़बान से बाहरी दुआ तो है लेकिन बड़ी मुश्किल से शब्द निकल रहे हैं। जहां तक विश्वास का सवाल है जाहिर में तो यही विश्वास है कि हम मुसलमान हैं। अल्हम्दो लिल्लाह ईमान रखते हैं। अल्हम्दो लिल्लाह अल्लाह तआला के अलावा किसी को साझी नहीं ठहराते। आस्था के मामले में सब ठीक है लेकिन अनुकरण क्या है? शिर्क में भी पीड़ित हैं। बिदअतों में भी पीड़ित हैं। धर्म के बारे में नई नई बातें आविष्कार कर ली हैं तो ऐसी स्थिति हो तो दुआ नहीं हो सकती। और फरमाया कि "वह मांग ही किया है जिस के परिणाम अच्छे न हों।" जब ऐसी मांग होती है तो उसके अच्छे परिणाम नहीं निकलते। इसलिए ऐसी हालत अगर होगी तो वह मांग मांग नहीं रहेगी। वह दिल से निकली हुई दुआ नहीं रहेगी। वह अल्लाह तआला की ख़ुशी प्राप्त करने के लिए और आज्ञाओं पर चलने की कोशिश और दुआ नहीं होगी। क्योंकि इसके अच्छे परिणाम नहीं निकल रहे। तो यह एक बड़ी स्पष्ट बात है कि अगर अच्छे

परिणाम नहीं निकल रहे तो हमें समझना चाहिए कि हमारे अंदर ही कोई कमज़ोरी है हमारी दुआ में कमी है। हमें दुआओं के तरीके और शैली नहीं आती। हम अल्लाह तआला की आज्ञाओं पर चलने वाले नहीं हैं। फरमाया कि "जब तक मनुष्य का शुद्ध मन और ईमानदारी और ईमानदारी से सभी अवैध रास्तों और उम्मीद के दरवाज़ों को अपने ऊपर बंद करके ख़ुदा तआला ही आगे हाथ नहीं फैलाता तब तक वह इसके योग्य नहीं होता कि अल्लाह तआला की सहायता और समर्थन उसे मिले लेकिन जब वह अल्लाह तआला ही के दरवाज़े पर गिर जाता और उसी से दुआ करता है तो उसकी यह हालत सहायता और मदद को खींचती है" और जब ऐसी हालत हो जाए बे नफ्स और निस्स्वार्थ होकर इंसान अल्लाह तआला के आस्ताना पर गिरे उस के समक्ष गिरे। उससे दुआ करे तो ऐसी स्थिति होती है जो अल्लाह तआला की मदद और समर्थन और सहायता को ख़ींचती है। उसे प्राप्त करती है और रहमत का कारण होती है। मनुष्य अल्लाह तआला के फज़्लों को प्राप्त करने वाला होता है। फरमाया "ख़ुदा तआला आकाश से मनुष्य के मन के कोनों में झाँकता है।" यह न समझो कि अल्लाह तआला बेख़बर है। अल्लाह तआला आसमान पर बैठा आदमी के दिल के कोनों तक से परिचित है।" अगर किसी कोने में भी किसी प्रकार के अन्धेरे या शिर्क और बिदअत का कोई हिस्सा होता है तो उसकी दुआओं और इबादतों को उसके मुंह पर उल्टा मारता है।" इसलिए दिल को हर लिहाज़ से आज़ाद करने की कोशिश करनी चाहिए। कहीं भी दिल के अंदर अंधेरा न हो कहीं भी किसी प्रकार के बहुदेववाद का पहलू न हो। कहीं भी किसी प्रकार की बिदअत का विचार अपने मन में पैदा न हो। अगर ऐसा हो तो इबादतें इबादतें नहीं रहतीं, अल्लाह तआला उन्हें स्वीकार नहीं करता। फरमाया "उसके मुँह पर उलटा मारता है और अगर देखता है कि उसका दिल हर प्रकार की स्वाभाविक स्वार्थों और अत्याचार से मुक्त और साफ है तो उसके लिए दया का दरवाज़ा खोलता है और उसे अपनी छाया में ले कर उसकी परवरिश की ख़ुद जिम्मेदारी लेता है" और जब मन शुद्ध हो जाता है, अल्लाह तआला की ख़ुशी के लिए इंसान सब कुछ कर रहा हो तो अल्लाह तआला उसे हर प्रकार की परवरिश उसकी ज़रूरतों का स्वयं ज़िम्मेदार हो जाता है।"

(मल्फूज़ात भाग 5 पृष्ठ 396-397 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

अत: एक वास्तविक अहमदी को अपने दिल को हर प्रकार के शिर्क (बहुदेववाद) और बिदअतों से मुक्त करना होगा। जो लोग कहते हैं कि हम ने बहुत दुआएँ कीं बहुत लम्बी लम्बी दुआएँ कीं, बड़ी दुआएं कीं और स्वीकार नहीं हुईं अपने दिलों को टटोलें, समीक्षा करें कि कहीं कोई छुपा शिर्क तो नहीं। किसी प्रकार की बिदअत में तो शामिल नहीं या और ऐसी बातें तो नहीं हो रहीं जिससे अल्लाह तआला ने मना फरमाया है।

फिर एक जगह यह स्पष्ट फरमाते हुए कि तक्वा की स्थापना ही इस जमाअत की स्थापना करने का उद्देश्य है, सय्यदना हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि

"इस सिलसिला से ख़ुदा तआला ने यही चाहा है और उसने मुझ पर प्रकट किया है कि तक्वा कम हो गया है।" यह सिलसिला कायम करने का उद्देश्य ही तक्वा की स्थापना है। यह बात प्रत्येक को ध्यान में रखनी चाहिए। फरमाया "कुछ तो खुले तौर पर निर्लज्जता में गिरफ्तार हैं और अनाचार और दुराचार में जीवन व्यतीत करते हैं और कुछ ऐसे हैं जो एक प्रकार की अशुद्धता का मिश्रण अपने कर्मों के साथ रखते हैं मगर उन्हें नहीं मालूम कि अगर अच्छे खाने में थोड़ा सा ज़हर पड़ जाए तो वह सारा विषाक्त हो जाता है।" हम में से कई हैं नेकियाँ करते हैं लेकिन कुछ ऐसी बुराइयों में शामिल हैं जो हमारी नेकियों को खा रही हैं। फ़रमाया कि अच्छा खाना हो अच्छी बात हो मामूली सा ज़हर भी उसे विषाक्त कर देता है और फरमाया कि "और कुछ ऐसे हैं जो छोटे गुनाह दिखावा इत्यादि जिनकी बारीक शाखाएं होती हैं उनमें से पीड़ित हो जाते हैं। अब अल्लाह तआला ने निश्चय किया है कि वह दुनिया को तक्वा और पवित्रता के जीवन का नमूना दिखाए। इसी उद्देश्य के लिए उसने यह सिलसिला कायम किया है वह पवित्रता चाहता है और एक पवित्र जमाअत करना उसकी इच्छा है।" फरमाया कि "तक्वा और पवित्रता का नमूना दिखाना है।"

(मल्फूज़ात भाग 5 पृष्ठ 96-97 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

अब हमें अपनी समीक्षा लेने की ज़रूरत है कि क्या हमारी अपनी स्थितियाँ ऐसी हैं कि हम ख़ुद तक्वा और पवित्रता का नमूना बन सकें और दूसरे हमसे सबक सीखें। तो यह समीक्षा ख़ुद हम अपनी हालतों से ले सकते हैं।

फिर इस बात का वर्णन करते हुए कि आप अपनी जमाअत को कैसे देखना चाहते हैं।? आप फरमाते हैं कि "इस सिलसिले को अल्लाह तआला ने ख़ुद अपने हाथ से स्थापित किया है और इस पर भी हम देखते हैं कि बहुत से लोग आते हैं और वह स्वार्थ वाले होते हैं।" अल्लाह तआला ने तो अपने हाथ से इसलिए स्थापित किया कि तक़्वा पर चलने वालों की एक जमाअत हो। अपने नफ़्सों का सुधार करने वालों जमाअत की स्थापित करे लेकिन फरमाया कि इसके बावजूद हमारे पास ऐसे लोग भी आ जाते हैं जिन का अपना उद्देश्य होता है। नेकी और तक्वा का अधिग्रहण उनका उद्देश्य नहीं होता बल्कि उनके कुछ व्यक्तिगत स्वार्थ होते हैं जिसके कारण से वे आ जाते हैं। फरमाया कि "अगर स्वार्थ पूरे हो गए तो ख़ैर नहीं तो किधर का धर्म और किधर का ईमान।" फिर छोड़ कर चले गए तो फिर ईमान कोई नहीं रहा फरमाया कि "लेकिन अगर इस के मुकाबला में सहाबा के जीवन में दृष्टि की जाए तो उनमें एक भी ऐसी घटना दिखाई नहीं देती। उन्होंने कभी ऐसा नहीं किया। हमारी बैअत तो बैअत तौबा ही है।" हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से हम जो बैअत करते हैं वह तो तौबा की बैअत ही है कि अपने गुनाहों से पश्चाताप करते हैं और भविष्य में नेकियों पर स्थापित होने की अल्लाह तआला से दुआ मांगते हैं फरमाया कि "लेकिन उन की बैअत (अर्थात सहाबा की बैअत) तो सिर काटने की बैअत थी। उन्होंने जो बैअत की वह तो सिर कटवाने की बैअत थी। उस समय तो तलवार का जिहाद था और इसके लिए हर समय प्रत्येक तैयार था।" एक ओर प्रतिज्ञा करते थे और दूसरी ओर अपने सारे धन, सामान, इज़्ज़त व आबरू और जान-माल को छोड़ जाते थे। सब कुछ छोड़ देते थे। "मानो किसी बात के भी मालिक नहीं हैं और इसी तरह से उनके कुल उम्मीदें दुनिया से विच्छेद हो जाती थीं। हर प्रकार के सम्मान और गरिमा और वैभव प्राप्त करने के इरादे समाप्त हो जाते थे।" उनका अपना कुछ नहीं था। न उन्हें अपनी ही इज़्ज़त की परवाह थी। न किसी महानता की इच्छा थी न किसी बड़े पद की इच्छा थी। केवल उद्देश्य था तो यह कि हम इस्लाम के लिए जान माल समय करने के लिए हर समय तैयार रहें। यह अहद हम आज भी करते हैं लेकिन उहदेदारों में से ऐसे भी हैं जो पदों की इच्छा रखते हैं कि शायद सीमित रूप में ही कुछ वैभव का वहां से व्यक्त हो जाती है। अगर पद मिलते हैं तो बजाय अल्लाह तआला का आभारी हों और पहले से बढ़कर धर्म की सेवा की भावना उनमें पैदा हो इस ओर ध्यान नहीं होता और केवल अपने पदों का विचार होता है तो अधिकारियों को भी ध्यान देना चाहिए।

फरमाया "किसको विचार था कि हम राजा बनेंगे।" सहाबा में से किस ने सोचा कि राजा बनेंगे या किसी देश के विजेता हो जाएंगे। अरबों की जो स्थिति थी उस समय किसी को ख्याल आ सकता था? बिल्कुल नहीं। ये बातें उनकी सोच व गुमान में भी नहीं थीं बल्कि वे तो हर प्रकार की उम्मीदों से अलग हो जाते थे और हर समय ख़ुदा तआला की राह में हर दु:ख और संकट को सुख के साथ सहन करने को तैयार हो जाते थे।" वे सम्मान तथा वैभव नहीं चाहते थे। वे पद नहीं चाहते थे महानता नहीं चाहते थे आदर नहीं चाहते थे वे तो बलिदान चाहते थे और इसी में उनके लिए ख़ुशी थी उसी में उन्हें मज़ा आता था। फरमाया कि "यहां तक कि जान तक देने को तैयार रहते थे इन की अपनी तो यही हालत थी वह इस दुनिया से बिल्कुल अलग और विच्छेद थे लेकिन यह अलग बात है कि अल्लाह तआला ने उन पर अपनी कृपा की और उन्हें सम्मानित किया।" वे तो हर बलिदान के लिए तैयार थे लेकिन अल्लाह तआला ने अपना फज़्ल किया और अपनी इनायत से उन्हें इतना सम्मानित किया। "और उन्हें जिन्होंने इस रास्ते में अपना सब कुछ कुर्बान कर दिया था हज़ारों कर दिया।" कई गुना और हज़ारों गुना कर दिया।

(मल्फूज़ात भाग 5 पृष्ठ 397-398 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

फिर बड़े दर्द से हमें हमारे आचरण के बेहतर होने, नेकियों पर स्थापित होने, बुराइयों का परित्याग करने की ओर ध्यान दिलाते हुए आप फरमाते हैं कि

"जो व्यक्ति अपने पड़ोसी को अपने आचरण में बदलाव दिखाता है कि पहले क्या था और अब क्या है वह मानो एक चमत्कार दिखाता है।" अपने पड़ोसियों को अगर हमारे अहमदी होने के बाद हम में बदलाव नज़र आता है या हर अहमदी जो है अपने पड़ोसी से ऐसा बर्ताव करता है कि वह हैरान हो कि यह मनुष्य साधारण इंसानों से नहीं है, मानो वह एक चमत्कार दिखाता है। एक ऐसा काम करता है जिसे देखकर लोग हैरान-परेशान होते हैं। फरमाया कि "इसका प्रभाव पड़ोसी पर बहुत उच्च स्तर का पड़ता है" और इसी उच्च नैतिकता के कारण पड़ोसी प्रभावित होता है और बहुत उच्च प्रभाव उस पर पड़ता है। फरमाया कि "हमारी जमाअत पर आपत्ति करते हैं कि हम नहीं जानते कि क्या तरक्की हो गई है और आरोप लगाते हैं कि झूठ और क्रोध से पीड़ित हैं।" दुश्मनों के बारे में बता रहे हैं, दूसरों के बारे में कि जमाअत पर आपत्ति करते हैं और यह आरोप लगा रहे हैं आपत्ति लगा रहे हैं कि

उनकी अहमदी होने से क्या तरक्की हो गई।? ये लोग अब भी झूठी शंका, कुधारणा, ग़ुस्सा इस में अभी ग्रस्त हैं। फरमाया कि "यह उनके लिए अफसोस का कारण नहीं है कि मनुष्य उत्कृष्ट समझ कर इस सिलसिला में आया था।" अब उन लोगों को फरमाया जो अहमदी हो गए। उन लोगों के लिए तो यह शर्म की बात है कि अच्छी चीज़ समझ कर इस सिलसिले में आए था या उन्हें देखकर, सिलसिला की शिक्षा को कोई व्यक्ति अच्छा समझकर शामिल हुआ था। फरमाया कि "जैसा कि एक सुयोग्य पुत्र अपने पिता की नेकनामी प्रकट करता है क्योंकि बैअत करने वाला पुत्र के आदेश में होता है।" एक शरीफ, आज्ञाकारी, नेक, बात मानने वाला बेटा जो है वह अपने पिता की नेकनामी का कारण बनता है और फरमाया क्योंकि बैअत करने वाला जो है वह भी बेटे के आदेश में आया है और इस की दलील आप ने यह फरमाई कि "इसीलिए आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पत्नियों को उम्माहातुल मोमनीन कहा गया है मानो कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सारे मोमनीन के पिता हैं।" आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पत्नियों उम्माहातुल मोमनीन हैं तो इसका अर्थ यह है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मोमिनों के पिता हैं। फरमाया कि "शारीरिक पिता पृथ्वी पर लाने का कारण होता है।" सामान्य जीवन में प्रत्येक व्यक्ति का एक पिता है वह माता-पिता जो हैं किसी रूह को या बच्चे के शरीर को ज़मीन पर लाने का कारण बनते हैं। माता पिता के कारण बच्चे के जन्म से बच्चा इस दुनिया में आता है "और ज़ाहरी जीवन का कारण" यह जीवन जो है यह इस को मिलता है "मगर (इस के मुकाबला में)आध्यात्मिक पिता आसमान पर ले जाता (है)" शारीरिक पिता पृथ्वी पर लेकर आता है और आध्यात्मिक पिता आसमान पर लेकर जाता है आध्यात्मिकता में प्रगति करवाता है "और वास्तविक केंद्र की ओर जाता है" अर्थात ख़ुदा तआला की ओर मार्ग दर्शन करता है। फरमाया कि "क्या आप पसंद करते हैं कि बेटा अपने पिता को बदनाम करे।?" कभी पसंद नहीं करोगे कि बेटा अपने पिता को बदनाम करे। न कोई पिता यह पसंद करता है कि उसका बेटा उसे बदनाम करने वाला हो।

अत: इसलिए जैसा कि पहले उल्लेख हो चुका अपने नमूने ऐसे बनाओ कि न दूसरों की ठोकर का कारण हो न अपने पिता को बदनाम करने वाले हो। फरमाया "कोई बेटा अपने पिता को बदनाम करे।(कोई पसंद करता है) वेश्याओं के यहां जाए?(वेश्याओं के पास चला जाए) लौंडे बाज़ी करता फिरे।? शराब पीए या और ऐसे बुरे कार्यों का दोषी हो। जुआ शराब इस तरह की हरकतें कर रहा हो। कोई पिता पसंद नहीं करता कोई नेक मुसलमान पिता यह पसंद नहीं करेगा कि उसका बेटा इस तरह की हरकतें करता हो बल्कि कुछ हरकतें, ऐसी हैं कुछ बातें ग़ैर मुस्लिम भी पसंद नहीं करते। फरमाया कि "शराब पीए और ऐसे बुरे कार्यों का करने वाला हो जो पिता की बदनामी का कारण हों।" फरमाया कि "मैं जानता हूँ कोई आदमी ऐसा नहीं हो सकता जो कि इस कार्य को पसंद करे लेकिन जब वह अयोग्य बेटा ऐसा करता है तो लोगों की ज़बान बंद नहीं हो सकती।" अगर कोई बेटा ऐसा करे तो लोग उस पर उंगलियां उठाएंगे इस बारे में बात करेंगे। उसके पिता के बारे में भी बातें करेंगे। "लोग उसके पिता के बारे में तुलना करके कहेंगे कि अमुक व्यक्ति का पुत्र अमुक बुरा काम करता है। इसलिए वह अयोग्य बेटा ख़ुद ही पिता की बदनामी का कारण हो जाता है। इसी तरह जब कोई व्यक्ति एक सिलसिला में शामिल होता है और इस सिलसिले की महिमा और सम्मान का ख्याल नहीं रखता और उसके ख़िलाफ करता है तो वह अल्लाह तआला के निकट पकड़ा जाएगा।" अल्लाह तआला की पकड़ में आ जाता है। "क्योंकि वह केवल अपने आप को ही विनाश में नहीं डालता बल्कि दूसरों के लिए एक बुरा नमूना होकर उन्हें सआदत और हिदायत के रास्ते से वंचित रखता है।" जो पहले शुरू में कहा गया था इस का विस्तार यहाँ कर दी। इसलिए फरमाया "जहां तक आप लोगों की शक्ति है ख़ुदा तआला से मदद मांगो और अपनी पूरी ताकत और हिम्मत से अपनी कमज़ोरियों को दूर करने की कोशिश करो। जहां हार जाओ वहाँ ईमानदारी और विश्वास से हाथ उठाओ क्योंकि विनम्रता और विनय से उठाए हुए हाथ जो ईमानदारी और विश्वास की तहरीक से उठते हैं खाली वापस नहीं होते।" कोशिश करो। अपने प्रयास सफल न हों तो यह न समझो कि बस अब कुछ नहीं हो सकता। दुआएं करो और दुआ करो और इतनी दुआएं करो कि जिनकी सीमा न हो लेकिन ईमानदारी से उठे हुए हाथ हों। अल्लाह तआला के समक्ष दुआएं करो तो सच्चाई से अपने दिल को टटोलते हुए देखो कि जो मैं कह रहा हूँ वह सच है। यही मैं चाहता हूँ। यही अल्लाह तआला से मांग रहा हूं क्योंकि अगर इस तरह होगा सच्चाई की तहरीक दिल में पैदा होगी और इसके नतीजे में हाथ उठेंगे, फल स्वरूप अल्लाह तआला के यहां ज़रूर इंसान झुकेगा तो ऐसे हाथ खाली वापस नहीं आते। अल्लाह तआला ज़रूर प्रदान करता है फरमाया "हम अनुभव से कहते हैं कि हमारी असंख्य दुआएं कुबूल हुई हैं और हो रही हैं।"

फिर फरमाया कि

"यह एक निश्चित बात है अगर कोई व्यक्ति अपने भीतर अपने जैसों के लिए सहानुभूति का जोश नहीं पाता वह कंजूस है।" अपने साथियों के लिए, दूसरे इंसानों के लिए अगर सहानुभूति का जोश नहीं है तो इसका मतलब है कि तुम कंजूस हो। फरमाया कि "अगर मैं एक राह देखूं जो भलाई और अच्छाई की है तो मेरा कर्तव्य है कि मैं पुकार-पुकार कर लोगों को बुलाऊं।" यह भी हमारा कर्तव्य है कि भलाई और अच्छाई की जिस राह को हमने देखा तभी हम अहमदियत को स्वीकार किया इसलिए अब हमारा कर्तव्य है कि हम पुकार पुकार के लोगों से कहें कि आओ और यहीं अपनी दुनिया और आख़िरत को संवारने के रास्ते देखो। फरमाया कि "इस बात की परवाह नहीं होनी चाहिए कि कोई इस पर अनुकरण करता है या नहीं।" हमारा काम बुलाना है हमारा काम सुधार करना है इसलिए यह न देखो कि कोई अमल कर रहा है कि नहीं स्वीकार करता है कि नहीं। एक फारसी का पद्य आप प्रस्तुत करते हैं।

"कस ब शनोद या न शनोद मन गुफ़्तगुवी मी कुनम"

कि कोई सुने या न सुने मैं तो कहता ही रहूंगा या समझाता ही रहूंगा।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 146-147 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

इसलिए अपने नेक नमूने स्थापित करके हमें फिर तब्लीग़ का हक भी अदा करना होगा और यह हर अहमदी पर यह जिम्मेदारी है इस तरफ हमें ध्यान देना चाहिए। अन्त में एक समय आएगा कि लोग सुनेंगे भी लेकिन जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया है कि अगर कोई नहीं भी सुनता तब भी हमें संदेश पहुंचाते रहना चाहिए लेकिन साथ ही जैसा कि आपने फरमाया कि आप की जमाअत से सम्बन्ध रख कर हमें अपने नमूने भी उच्च स्तरों के प्रस्तुत करने चाहिए और फिर लोगों का ध्यान भी हमारी ओर होगा।

फिर हमें हमारी हालतों के सुधार करने की नसीहत देते हुए आप फरमाते हैं कि इल्हाम में जो यह आया है। اِلَّا الَّذِیۡنَ عَلَوۡا بِاسۡتِکۡبَارٍ यह प्लेग के बारे में अरबी का इल्हाम है इससे पहले भी अरबी के शब्द हैं। इस का अर्थ यह है कि जो भी तेरे घर के अंदर आएगा उसे मैं बचाऊँगा मगर साथ ही यह शब्द भी है कि اِلَّا الَّذِیۡنَ عَلَوۡا بِاسۡتِکۡبَار अर्थात वे लोग जो अपने आप को उच्च समझते हैं और इस की आपने व्याख्या इस तरह फरमाई कि पूरे तौर पर पालन नहीं करते। अब पालन करने वाले तो वही होंगे जिन्होंने माना है आप ने फरमाया कि जो पूरे तौर पर पालन नहीं करते वे भी इस से अभिप्राय हैं। फिर आप फरमाते हैं कि "यह बड़ा भय और डराने वाली है" जहां अल्लाह तआला ने यह गारंटी दी कि जो तेरे घर में आएगा उस की मैं रक्षा करूंगा वहां यह भी है कि पूरी तरह से पालन नहीं करते उन पर यह आदेश लागू नहीं होगा। उनके लिए यह अनिवार्य नहीं होगा कि ज़रूर उनकी रक्षा की जाए या अल्लाह तआला पर अनिवार्य नहीं होगा कि ज़रूर उनकी रक्षा करे। फरमाया "इसलिए ज़रूरी है कि बार बार किश्ती नूह को पढ़ो और कुरआन शरीफ को पढ़ो और उसके अनुसार अनुकरण करो। किसी को क्या पता है कि क्या होने वाला है। तुम ने अपनी क़ौम से जो लानत मलामत लेनी थी ले चुके।" अहमदी होने के बाद बहुत सारे लोग दुश्मनी करते हैं लेकिन अगर इस संकट को लेकर ख़ुदा तआला के साथ भी तुम्हारा मामला साफ न हो और उसकी दया और कृपा के नीचे न आओ तो कितनी मुसीबत और मुश्किल है। फरमाया कि "अख़बारों वाले कितना शोर मचाते हैं और हमारे विरोध में हर पहलू से ज़ोर लगाते हैं" और आजकल तो यह विरोध बहुत बढ़ा हुआ है इसीलिए बहुत सारे लोग हमारे अहमदी पाकिस्तान से इसी विरोध के कारण यूरोप में आते हैं। फरमाया "मगर वे याद रखें कि ख़ुदा तआला के काम मुबारक होते हैं। हाँ यह आवश्यक है कि बरकत से भाग लेने के लिए हम में सुधार और बदलाव हो इस लिए तुम अपने ईमानों और कर्मों का आत्मनिरीक्षण करो" फरमाया "तुम अपने ईमानों और कार्यों का आत्मनिरीक्षण करो कि क्या ऐसा परिवर्तन और सफाई कर ली है कि तुम्हारा दिल ख़ुदा तआला का अर्श हो जाए और तुम उस की सुरक्षा की छाया में आ जाओ।

(मल्फ़ूज़ात भाग 4 पृष्ठ 69-70 हाशिया नम्बर 2 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

तो यह समीक्षा लेने की ज़रूरत है। नए अहमदी हैं या पुराने हैं, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानकर जब तक हम अपना व्यावहारिक सुधार नहीं करेंगे उन बरकतों से लाभ नहीं पा सकते जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आने से मिलनी हैं और न ही हम ख़ुदा तआला की सुरक्षा की छाया में आ सकते हैं।

फरमाया कि "ईमान के लिए विनय की हालत बीज के समाना है और फिर लग़्व बातों को छोड़ने से ईमान अपनी नरम नरम हरियाली निकालता है।" विनम्रता पैदा करना, विनय पैदा करना यह ईमान के बीज की स्थिति है और फिर जब ईमान पैदा हो जाए और इंसान लग़्व बातों को भी छोड़ दे। विनम्रता पैदा हो जाए और लग़्व बातों को भी छोड़ दो तो जिस तरह पौधा बढ़ता है ईमान से भी नरम नरम सी हरियाली बाहर निकलनी शुरू होती है और फिर फरमाया कि "माल ज़कात के रूप में देने से ईमान के पेड़ की टहनियाँ निकल आती हैं।" फिर जो वित्तीय क़ुरबानी करते हैं। ज़कात देते हैं अल्लाह तआला की राह में खर्च करते हैं। वे इस पौधे को और बढ़ाते हैं और इसकी इस की टहनियां निकलना शुरू हो जाता है "जो इस को कुछ मज़बूत करती हैं" कुछ पेड़ थोड़ा सा मजबूत हो जाता है। फिर फरमाया कि "नफसानी शहवतों का मुकाबला करने से इन टहनियों में ख़ूब मज़बूती और दृढ़ता पैदा हो जाती है" और जब इंसान के दिल में काम भावना पैदा होती है। गंदी इच्छाएं उठती हैं, नफ्स की इच्छाएं पैदा होती हैं, बुराइयों की ओर ध्यान पैदा होता है और इन का मुकाबला इंसान करता है और उन्हें दबा देता है न कि उन्हें करने लग जाए। जब ऐसी हालत हो, जब उन्हें दबाते हो तो फिर यह जो पेड़ की टहनियां निकली होती हैं उनमें कठोरता और मज़बूती पैदा हो जाती है जब इंसान अपने नफ्स को मारता है और फिर फरमाया कि "अपने वादों और आमानतों की सभी शाखाओं का संरक्षण करने से ईमान का पेड़ अपने मज़बूत तने पर खड़ा हो जाता है।" फिर जो तुम ने अहद किए हैं जो आपके सुपुर्द अमानतें हैं उनकी अगर सही रक्षा करो। प्रत्येक ने वचन दिया है कि धर्म को दुनिया में प्राथमिकता करूंगा। ख़ुद्दामुल अहमदिया में भी अहद दोहराया है। अंसारुल्लाह में भी अहद दोहराया है। लजना में भी अहद दोहराया है। जमाअत भी बैअत के समय यह अहद लेती है तो अगर इस अहद की रक्षा करोगे और अपनी अमानतें जो तुम्हारे सुपुर्द हैं। अमानतें क्या हैं? उहदेदार हैं उनके ज़िम्मा उहदों की अमानतें हैं। साधारण अहमदी है उस के ज़िम्मे अमानत है कि वह अहमदियत का सही नमूना बन कर दिखाए और किसी के लिए ठोकर का कारण न हो अगर ऐसा होगा तो यह ईमान का पेड़ जो मजबूत तने पर खड़ा हो जाएगा। यह सारी बातें मिलकर इसे मजबूत पेड़ बना देंगी और फरमाया कि "फिर फल लाने के समय (एक पेड़ जब बड़ा हो गया तब उसे फल लाने का समय आ गया और फल लाने के समय) एक और ताकत का फ़ैज़ उस पर होता है क्योंकि उस शक्ति से पहले न पेड़ को फल लग सकता है न फूल।"

(बराहीन अहमदिया भाग 5 रूहानी ख़ज़ायन भाग 21 पृष्ठ 209 हाशिया)

फिर जब ऐसा मज़बूत हो जाए तो फिर अल्लाह तआला के फज़ल भी अवतरित होते हैं और फिर अल्लाह तआला इस पेड़ को फल लगाता है। और वह अल्लाह तआला के फ़ैज़ पाता है तो हमें विनम्रता भी पैदा करने की ज़रूरत है क्योंकि इसी से हम नफस की क़ुरबानी का हक़ अदा कर सकते हैं। अपने ईमान में तरक्की कर सकते हैं। लग़्व जिन्होंने आजकल हमें घेरा हुआ है और हर घर में मौजूद हैं टीवी और इंटरनेट के मामले में उनसे बच सकते हैं और उनसे बचना चाहिए अपने ईमान में तरक्की के लिए और तभी हम अल्लाह तआला के फज़ल से फल फूल लाने वाली शाखाएं बन सकते हैं और अपनी भी और अपनी नस्लों की भी दुनिया और आखिरत संवारने वाले बन सकते हैं।

एक अवसर पर आप ने सिलसिला के उज्जवल भविष्य के बारे में ख़बर देते हुए फरमाया कि "यह समय भी आध्यात्मिक लड़ाई का है। शैतान के साथ जंग शुरू है। शैतान अपने सभी हथियारों और कोशिशों को लेकर इस्लाम के किले पर हमला कर रहा है और वह चाहता है कि इस्लाम को हरा दे मगर ख़ुदा तआला ने इस समय शैतान की अंतिम लड़ाई में दृढ़तापूर्वक हमेशा के लिए हार के लिए इस सिलसिला को स्थापित क्या है।"

इसलिए अपनी समीक्षा करने की ज़रूरत है कि क्या हमारी हालत ऐसी है कि हम शैतान से लड़ने के लिए हर समय तैयार हों। फरमाया "मुबारक जो उसे पहचानता है। अभी थोड़ा समय है अब सवाब मिलेगा" (सवाब लेने का तो थोड़ा समय है) "लेकिन जल्द ही समय आता है कि अल्लाह तआला इस सिलसिले की सच्चाई को सूर्य से भी अधिक उज्ज्वल कर दिखाएगा वह समय होगा कि ईमान सवाब का कारण न होगा" जब सूरज की तरह उज्ज्वल हो जाएगा तो उस समय तो ईमान लोग लाएंगे ही लेकिन वह इनाम का कारण नहीं होगा और तौबा का दरवाज़ा बंद होने के समान होगा। यद्यपि स्वीकृति तो होगी लेकिन वह गुणवत्ता नहीं होंगे जो आज हैं जबकि दुनिया हमें कुछ नहीं समझती। फरमाया "इस समय मेरे स्वीकार करने वाले को ज़ाहिरी तौर पर एक भव्य लड़ाई अपने नफ्स से करनी पड़ती है वह देखेगा कि कभी कभी उसे बिरादरी से अलग होना पड़ेगा है उसे इस सांसारिक कारोबार में रोक लगाने की कोशिश की जाएगी उसे गालियां सुननी पड़ेंगी" (और आजकल बहुत सारे देशों में या मुस्लिम देशों में विशेष रूप से यह हो रहा है) "लानतें सुनेगा मगर इन सारी बातों का इनाम अल्लाह तआला के यहां उसे मिलेगा लेकिन जब दूसरा समय आया और उस के ज़ोर के साथ दुनिया की और लौटना हुआ जैसे ऊंचे टीले से पानी गिरता है और कोई इनकार करने वाला नज़र नहीं आया तब स्वीकार करना किस स्तर का होगा।? उस समय मानना बहादुरी का काम नहीं। सवाब हमेशा दु:ख ही के दिनों में होता है। फरमाया कि "हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहो अन्हो ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को स्वीकार कर के अगर मक्का की सरदारी छोड़ दी थी(मक्का के सरदार बन सकते थे) तो अल्लाह तआला ने उन्हें एक दुनिया की बादशाही दी। फिर उमर रज़ियल्लाहो अन्हो ने एक कंबल पहन लिया,(अर्थात इस्लाम स्वीकार की तो विनम्रता, ग़रीबी और दरिद्र की हालत हो गई लगभग इतनी दौलत तो नहीं रही) और कहा कि

"हर चह बादा बाद मा कशती दर आब अन्दाख़तीम"

(कि अब जो भी होना है हो हम ने नाव नदी में डाल दी है) के समरूप होकर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को स्वीकार किया तो क्या ख़ुदा तआला ने उन्हें इनाम का कोई हिस्सा बाकी रख लिया? कभी नहीं जो ख़ुदा तआला के लिए कुछ भी हरकत करता है वह नहीं मरता जब तक उसका इनाम न पाए। हरकत शर्त है।" (ख़ुद पालन करना चाहिए ख़ुद आगे बढ़ना चाहिए। फिर अल्लाह तआला सम्मानित करता है।) एक हदीस में आया है कि अगर कोई अल्लाह तआला की ओर मामूली गति से आता है तो अल्लाह तआला उसकी ओर दौड़कर आता है" फरमाया कि "ईमान यह है कि कुछ छिपा हो तो मान ले जो हिलाल(तीन दिन का चांद) को देख लेता है वह तेज नज़र कहलाता है" (जो पहले दिन के चाँद को देखता है या पहले दो तीन दिन के चाँद को देख ले उसी की तेज़ नज़र होती है) लेकिन चौदहवीं को चाँद को देखकर शोर मचाने वाला (कह दे कि मैं ने चंद्रमा देख लिया तो वह) पागल कहलाएगा।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 5 पृष्ठ 25-26 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

अल्लाह तआला करे कि हम अपने ईमानों को मज़बूत करने वाले हों। अल्लाह तआला के आदेशों का पालन करते हुए ख़ुशी प्राप्त करने वाले हों। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत का हक अदा करने वाले हों। अपने कर्म से दुनिया को सच्चाई का रास्ता दिखाने वाले हों और अल्लाह तआला ने जो हम पर उपकार किए हैं उनका वास्तविक रंग में धन्यवाद करने वाले हों। अल्लाह तआला हमें उसकी ताकत प्रदान करे।

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

वक्फ आरज़ी की मुबारक तहरीक में शामिल हों।

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमेनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला ने अपने ख़ुत्बा जुम्अ: 4 जून 2004 ई में फरमाते हैं" प्रत्येक अहमदी अपने लिए अनिवार्य कर ले कि उस ने वर्ष में कम से कम एक या दो सप्ताह तक वक्फ करना है।"

चूंकि अब भारत में प्राय प्रान्तों में स्कूलों कोलेजों में गर्मी की छुट्टियां शुरु होने वाली हैं इस लिए जमाअत के लोग विशेषकर के बड़ी कक्षाओं के छात्र की सेवा में निवेदन है कि वे सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमेनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला के मुरारक आदेश के पालन में एक या दो सप्ताह के लिए वक्फ आरज़ी कर के इस मुबारक तहरीक की बरकतों से लाभांन्वित हों।

(नज़ारत इस्लाह व इर्शाद तालीमुल कुरआन वक्फ आरज़ी कादियान)

☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN XXX
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
PUNHIND 01885 Vol. 1 Thursday 9 June 2016 Issue No. 14

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : +91-1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

पृष्ठ 2 का शेष

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि इसके विपरीत यह बात सही है कि अल्लाह तआला ने अत्याचार, अमानवीय हरकतों और अन्याय के ख़िलाफ कार्रवाई करने का आदेश दे रखा है। इस्लाम की शिक्षाओं के अनुसार एक मुसलमान को अत्याचारी के हाथ को अत्याचार से रोकने, अन्याय के सभी प्रकार को और सभी प्रकार के दुर्व्यवहार को समाज से खत्म करने की कोशिश करने का निर्देश है।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार यह काम दो तरह से किया जा सकता है। प्रथम यह उपाय है कि आपसी बातचीत और मामला को संवारते हुए मुद्दों को तय किया जाए। और यह पसंदीदा तरीका है। लेकिन अगर ऐसा संभव न हो तब अन्य तरीका अपनाने का आदेश है कि शक्ति से अत्याचार बंद करो ताकि समाज में स्थायी शांति की स्थापना संभव हो सके।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि धर्म के अतिरिक्त अन्य सीमाओं में भी कुछ नियम होते हैं, और उनके उल्लंघन पर सज़ा दी जाती है। अगर सुधार बिना सज़ा दिए संभव हो या मामूली सज़ा देने से हो सकता है तो यह सबसे अच्छा है। लेकिन अगर सुधार के लिए कड़ी सज़ा देना आवश्यक हो तो समाज सुधार और दूसरों की चेतावनी के लिए वह सज़ा दी जाती है। अब इस बात को धार्मिक संदर्भ में देखें तो हमें पता चल जाएगा कि इस्लामी शिक्षाओं में अपराध की सज़ा बदला लेने के लिए या सिर्फ तकलीफ पहुंचाने के लिए नहीं दी जाती। बल्कि इसका उद्देश्य अत्याचार को समाप्त करना और लोगों में सकारात्मक सुधार करना है। कुरआन के अनुसार अगर किसी एक ही व्यक्ति या समूह का सुधार माफ करने या दया से काम लेने से हो सकता हो तो यही तरीके अपनाने चाहिए। लेकिन अगर क्षमा व माफ करने से सुधार का लक्ष्य हासिल नहीं हो सकता हो तो फिर समाज के सुधार के लिए सज़ा लागू होनी चाहिए। इसलिए इस्लाम में सज़ा की कल्पना एक अद्वितीय और दूरदर्शिता की कल्पना होती है क्योंकि उस उद्देश्य का समाज की बेहतरी के लिए लोगों को प्रशिक्षित करना है, और उच्च मानवीय मूल्यों को समाज में प्रचलित करना है ताकि लोग अपने निर्माता की विशेषताओं को अपने अंदर पैदा करके एक दूसरे का ध्यान देने लग जाएं। इसलिए इस्लाम में किसी एक ही व्यक्ति या किसी समूह के अधिकार छीन लेने पर उसके अपराध के अनुसार सज़ा देने का आदेश दिया है। लेकिन दूसरी ओर अगर सज़ा के बिना समाज में सुधार हो सकता है अगर इस मार्ग को बेहतर करार दिया गया है। इसीलिए पवित्र कुरआन की सूर अन्नूर की आयत 23 में फरमाता है कि "और चाहिए कि वे क्षमा से काम लें और माफ करें।" इसी तरह सूर आले इम्रान की आयत 135 में फरमाता है कि "क्रोध को दबाने वालों और लोगों को माफ करने वालों से अल्लाह प्यार करता है। इस के अतिरिक्त कुरआन में कई स्थानों पर यह आदेश है कि इंसान को जहां तक संभव हो क्षमा व माफ करने से काम लेना चाहिए क्योंकि असली उद्देश्य चरित्र में बेहतरी और सुधार है, न कि बदला लेना।"

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि देशों या समूहों के आपसी मतभेदों के निपटाने और फिर न्याय के स्थायी स्थापना के लिए अल्लाह तआला सूरत अलहुजरात आयत 10 में एक सुनहरा नियम वर्णन करता है कि "अगर दो देश या समूह आपस में लड़ पड़े तो एक तटस्थ समूह उनके बीच मामले को शांतिपूर्ण रूप से हल करवाते हुए सुलह कराए। अगर उनके बीच समझौता हो जाए तो सभी के साथ समान स्तर पर व्यवहार किया जाए। लेकिन उनमें से कोई समूह अनुबंध का उल्लंघन किया और दूसरे पर चढ़ाई कर दे तो अन्य सभी समूहों या देश मिलकर अन्याय को रोकने के लिए उसके ख़िलाफ बल करते हुए चढ़ाई कर दें। लेकिन अगर वह दुर्व्यवहार करने वाला गिरोह अपने दुर्व्यवहार और अत्याचार से रुक जाए तो इंसाफ की शर्त को पूरा करते हुए इन दोनों समूहों के बीच सुलह करा दो और दुर्व्यवहार करने वाले को बतौर एक स्वतंत्र सरकार या देश के विकास के लिए पूरी तरह अनुमति दें। इन सभी बातों को देखकर हम पर यह प्रमाणित हो जाता है कि सभी इंसानों का रब, अल्लाह यह चाहता है कि हम सब लोग शांति के साथ, न्याय स्थापित करते हुए एक दूसरे के साथ मिलकर, एक साथ हैं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि जहां तक धार्मिक शिक्षाओं का संबंध है, इस्लामी मान्यताएं, धार्मिक स्वतंत्रता और आज़ादी ज़मीर की वाहक हैं। इस्लाम में हर व्यक्ति को न केवल अपनी इच्छा का धर्म अपनाने की अनुमति है बल्कि धर्म प्रचार करने की भी खुली अनुमति है। "धर्म" और "विश्वास" तो दिल का मामला है। इसलिए धर्म के धारण करने में कोई ज़बरदस्ती नहीं। जबकि अल्लाह तआला ने इस्लाम को एक पूर्ण धर्म बनाया है किसी को अधिकार नहीं कि वह लोगों को ज़बरदस्ती सम्मिलित करे। प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह धार्मिक प्रवृत्ति रखता हो या न रखता हो उसे इस्लाम स्वीकार करने की स्वतंत्रता है। लेकिन मुख्य बात यह है कि इस्लाम स्वीकार करने की अपनी इच्छा हो और वह यह फैसला बिना किसी दबाव के करे। बिल्कुल इसी तरह अगर कोई मुसलमान इस्लाम छोड़ना चाहे तो कुरआन की शिक्षाओं के अनुसार ऐसे आदमी या औरत को इस्लाम को छोड़ने का भी अधिकार है। जबकि हमें विश्वास है कि इस्लाम एक विश्वव्यापी धर्म है और उसकी शिक्षाओं पूर्ण हैं कोई भी व्यक्ति अगर उसे छोड़ना चाहता है तो यह उसकी इच्छा है और उसे यह फैसला करने का हक है। सूर अलमाइदा की आयत 55 में अल्लाह तआला फरमाता है कि अगर तुम में से कोई व्यक्ति इस धर्म से फिरना चाहे तो उसे जाने दो। अल्लाह तआला उसकी जगह अधिक बेहतर और अधिक ईमानदार लोगों को तुम में शामिल कर देगा। इसलिए किसी सरकार, समूह या व्यक्ति को अधिकार नहीं कि वह उसे किसी प्रकार की कोई सज़ा दे या उस पर कोई प्रतिबंध लगाए। इसलिए यह बात कि इस्लाम में मुर्तद की सज़ा है एक ग़लत और निराधार आरोप है। इस्लामी शिक्षाओं की धुरी और केंद्र अल्लाह की हस्ती है और अल्लाह सभी इंसानों का रब है। इसका अर्थ यह हुआ कि जो लोग इस्लाम के नाम पर हिंसा और क्रूर कार्रवाई कर रहे हैं वह अल्लाह को "रब्बुल आलमीन" नहीं मानते। या कि वह अल्लाह तआला के "रब्बुल आलमीन" होने पर विश्वास तो करते हैं लेकिन उन्हें इसका एहसास ही नहीं और इसलिए वह इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं से दूर जा रहे हैं।

(शेष.....)

(अनुवादक शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

لَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقَاوِيلِ لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِينِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वे कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बंधित कर देते तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह और की जान की शिरा काट देते ।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे प्राय: उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित किया गया है। किताब प्राप्त करने के लिए इच्छुक पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**
Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186
Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab
For On-line Visit : www.alislam.org/urdu/library/57.html

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badr, at Fazle-Umar Printing Press Qadian, Harchowal Road Po. Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab, India. Editor Shaikh Mujahid Ahmad